Date
18 April 2020

B.Ed - IInd

Subj - Work Education, Gandhiji's Nai Talim & Community.

टैगोर का नई तालीम प्रतिमान ⇒ टैगोर के जीवन दर्शन में विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं, आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, यथार्थवाद, प्रयोजनवाद, मानवतावाद, लोकतंत्र वाद तथा विश्ववाद का संश्लेषण मिलता है। उनके जीवन दर्शन का सीधा प्रभाव उनके शिक्षा दर्शन में परिलक्षित होता है। वस्तुतः टैगोर ने फ्रोबेल, पेस्टालॉजी, हरबर्ट, डी.वी. आदि शिक्षाशास्त्रियों की तरह बड़े मौलिक और आश्चर्यमय ढंग से अपने शिक्षा संबन्धी विचारों का सफल प्रयोग किया, विश्वभारती जिसका सजीव प्रमाण है।

टैगोर ने 'शिक्षा' शब्द का प्रयोग अत्यन्त व्यापक अर्थ में किया है। इन्होंने लिखा है कि, "सर्वोच्च शिक्षा वही है जो सम्पूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है।" सम्पूर्ण सृष्टि से टैगोर का अभिप्राय संसार की चर और अचर जड़ और चेतन, सजीव और निर्जीव सभी वस्तुओं से है। इन वस्तुओं से हमारे जीवन का सामंजस्य तभी हो सकता है, जब हमारी सभी शक्तियाँ विकसित हो और पूर्णता के उच्चतम बिन्दु तक पहुँचे। इसी को टैगोर ने मनुष्यत्व कहा है। शिक्षा मनुष्य का शारीरिक, बौद्धिक, आर्थिक, नैतिक, आध्यात्मिक और धार्मिक विकास करती है।

टैगोर की शिक्षा संबन्धी मान्यताएँ इस प्रकार है —

I. शिक्षा पूर्ण मनुष्यता का विकास है।

II. शिक्षा सामाजीकरण का साधन है।

Scanned with CamScanner

III. शिक्षा प्रकृति के साथ अनुकूल साधन है।

IV शिक्षा जीवन की सच्ची वास्तविकताओं का सामना करने की क्षमता का विकास करने का साधन है।

V. शिक्षा स्वतंत्र और आनन्दपूर्ण वातावरण में सृजनात्मकता का साधन है।

VI शिक्षा पुस्तकीय ज्ञान के स्थान पर क्रियाशीलता के विकास का साधन है।

VII. शिक्षा सभी प्रकार की दासता से मुक्ति का साधन है।

VIII शिक्षा अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास का साधन है।

Scanned with CamScanner